हिन्दी, आरोह - 2 "आधार"

काव्य - खण्ड ⇒ कवि = हरिवंश राय बच्चन
कविता = 1. आत्मपरिचय
2. एक गीत

Q. व्याख्या एवं अवबोधन संबंधी प्रश्न

1. आत्मपरिचय

प्रश्न : व्याख्या ⇒ मैं और, और जग और, कहाँ का नाता,
मैं बना-बना कितने जग रोज मिटाता;
जग जिस पृथ्वी पर जोड़ा करता वैभव,
मैं प्रति पग से उस पृथ्वी को ठुकराता।
मैं निज रोदन में राग लिए फिरता हूँ,
शीतल वाणी में आग लिए फिरता हूँ,
हों जिस पर भूपों के प्रासाद निछावर,
मैं वह खंडहर का भाग लिए फिरता हूँ।

उत्तर प्रसंग ⇒ प्रस्तुत काव्यांश हमारी हिन्दी की पाठ्य-पुस्तक आरोह भाग-2 के अन्तर्गत आधुनिक कवि हरिवंश राय बच्चन द्वारा रचित 'आत्म परिचय' नामक कविता में से अवतरित है। इस काव्यांश में कवि ने साहित्यकार के जीवन को सांसारिक व्यक्ति के जीवन से भिन्न बताया है।

कवि कहते हैं कि मैं और संसार के लोग भिन्न हैं। मेरे व्यवहार व आचरण में तथा संसार के व्यवहार और आचरण में कोई सम्बन्ध नहीं है।

Scanned with CamScanner

मेरा और इस संसार का गहरा संबंध है, मैं अपने मन के द्वार विचारों में कितने संसार रोज बनाता और सामाप्त करता हूँ। मैं सदैव अपनी कल्पनाओं में खोया, भावों में डूबा रहता हूँ।

अर्थात् संसार के लोग पृथ्वी पर रहते हुए धन-दौलत इकट्ठा करने में लगे रहते हैं। मेरी सम्पत्ति मेरे हृदय के भाव हैं। इस पंक्ति का भाव यह है कि कवि अपनी शीतल और मधुर आवाज़ में भी जोश, आत्मविश्वास, साहस, दृढ़ता जैसी भावनाएँ बनाए रखता है ताकि वह अन्य लोगों को भी जागृत कर सके।

Q.2 "मैं और, और जग और कहाँ का नाता" पंक्ति में और शब्द की विशेषता बताइए।

Ans "मैं और, और जग और कहाँ का नाता" पंक्ति में "और" शब्द भाषा विशिष्टता लिए हुए है। यहाँ 'और' शब्द का तीन बार प्रयोग हुआ है। अतः यहाँ यमक अलंकार है। पहले "और" में कवि स्वयं को संसार से भिन्न बताता है। दूसरे "और" के प्रयोग में संसार में आम लोग सांसारिक सुख-सुविधाओं को अंतिम लक्ष्य मानता है। तीसरे 'और' का प्रयोग में कवि एक सहृदय प्राणी होता है, जिसे पीड़ित व्यक्ति के दुख अत्यन्त दुखी करते हैं। जो भावों को

[illegible] लिए फिरता रहता हूँ,

Q.3 कविता एक ओर जग-जीवन का भार लिए घूमने की बात करती है और दूसरी ओर मैं कभी न जग का ध्यान किया करता हूँ - विपरीत से लगते इन कथनों का क्या आशय है?

Ans. 'आत्मपरिचय' कविता के रचयिता का मानना है कि स्वयं को जानना दुनिया को जानने से ज्यादा कठिन है। संसार में रहते हुए संसार के साथ द्वन्द्व की स्थिति उत्पन्न होना स्वाभाविक है लोग बात-बात पर कुछ पर हावी होते हैं दुनिया अपने व्यंग्य-बाण तथा शासन-प्रशासन, से चाहे जितना कष्ट दे, पर दुनिया से कटकर मनुष्य रह भी नहीं पाता, लेकिन फिर भी मैं संसार के लोगों से प्यार करता हूँ। मैं अपने हृदय में उनके प्रति प्रेम लिए फिरता हूँ। संसार के लोग चाहे मेरी अपनी बातों से अवहेलना करें किंतु मैं उनके प्रति भी अपने प्रेमपूर्ण स्वर रखता हूँ।

अर्थात् कवि कहना चाहता है कि संसार के व्यवहार की परवाह न करते हुए मैं अपना मस्ती पूर्ण जीवन यापन करता हूँ।